



# INDIRA GANDHI NATIONAL OPEN UNIVERSITY

Assignment Submission for Term-End Exam June-2024

ENROLLMENT NUMBER : 

2	2	5	4	7	0	3	0	8	2
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---

NAME OF THE STUDENT : NIKITA CHAUHAN

STUDENT ADDRESS : Akbarpur, Baharmpur, Ghazipur, UP

PROGRAMME TITLE & CODE : MHD: Master of Arts (Hindi)

COURSE TITLE : Kahani: Swarup Aur Vikaas

COURSE CODE : MHD-09

REGIONAL CENTRE NAME & CODE : 01: Delhi-1 (Mohan Estate (South Delhi))

STUDY CENTRE NAME & CODE : 0710: Deshbandhu College (710)

MOBILE NUMBER : 

7	3	0	3	8	2	2	4	1	2
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---

E-MAIL ID : nikitachauhan7838@gmail.com

DATE OF SUBMISSION: 28-04-2024

Nikita  
(SIGNATURE OF THE STUDENT)



इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय  
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली - 110068  
Indira Gandhi National Open University  
Maidan Garhi, New Delhi - 110068



IGNOU - Student Identity Card

Enrolment Number : 2254703082  
RC Code : 07: DELHI 1 (MOHAN ESTATE (SOUTH DELHI))  
Name of the Programme : MHD : MASTER OF ARTS (HINDI)  
Name : NIKITA CHAUHAN  
Father's Name : VEERPAL SINGH CHAUHAN  
Address : HOUSE NO 186 GALI NO 2, BUDH VIHAR  
AKBARPUR BAHARAMPUR  
GHAZIABAD GHAZIABAD UTTAR PRADESH  
Pin Code : 201009



2254703082

Instructions  
1. This card should be produced on demand at the Study Center, Examination Center or any other State/Agency of IGNOU to use its facilities.  
2. The facilities would be available only relating to the Programme/course for which the student is registered.  
3. This ID Card is generated online. Students are advised to take a color print of this ID Card and get it laminated.  
4. The student details can be online checked with the QR Code at [www.ignou.ac.in](http://www.ignou.ac.in)

Registrar  
Student Registration Division



एम. एच. डी - 09  
कहानी: रूप और विकास  
(२००५-क)

① निम्नलिखित में से सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

(क) वस्तु और इच्छा की दृष्टि से 'पराभा सुख' कहानी का विश्लेषण कीजिए।

- प्रगतिशील चिंतन के प्रतिनिधि और हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार यशपाल मुख्यतः मध्यमवर्गीय जीवन के कथाकार हैं और इस वर्ग से सम्बद्ध उनके साहित्य बहुत ही मार्मिक बन पड़े हैं। मध्यवर्गी की असंतोखियाँ, कम्प्लेक्स, विरोधाभासों, लड़ियों आदि इतना प्रबल कथापात करने वाला अन्यत्र कहानीकार नहीं है। वे विरोधी परिस्थितियों का वैषम्य प्रदर्शित कर व्यंग्य की सर्जना उनकी रचना की प्रमुख विशेषता हैं।

यशपाल जी अपनी कहानियों में उस प्रगतिशील परिवर्तन मध्यवर्गी की भूमिका को विशेष रूप से रेखांकित करते हैं, जो सामाजिक, राजनीतिक प्रगति का समर्थक और वाहक हैं। आकाश की भूमिका में यशपाल जी ने लिखा है कि "कला और साहित्य की उद्देश्य सभी अवस्थाओं में मनुष्य में नैतिकता और कर्तव्य की प्रवृत्तियों की चिकित्सिका को ढूँढ़ निकालना ही रहता है।" यशपाल जी लिखते हैं - "हमारी कल्पना का आवार जीवन की उस वास्तविकता से ही होता है। उनकी कल्पना अतीत के सुखदुःख को अनुभूति का चित्र बनाकर उससे ही संवाद करने का तैयार नहीं है। फलस्वरूप उन्होंने अपने साहित्य में जीवन के यथार्थ का चित्रण किया।



## पराया सुख कहानी

हिंदी के प्रख्यात साहित्यकार यशपाल जी सुप्रसिद्ध कथानी पराया सुख उनकी कहानी संग्रह शानदान में प्रकाशित हुई। यह यशपाल जी के उस दौर की रचना है जब वे रचना और पद्यार्थी के अंतःसंबंधों पर चिंतन कर रहे थे और मानते थे कि लेखक की दृष्टि निरंतर अपरिवर्तित परिवेश पर केंद्रित रहनी चाहिए। जिस प्रकार रीयकता और जीवन हमारी पसंद नापसंद और बीबी दृष्टि पर आधारित होता है। ठीक उसी प्रकार कहानी के गुण और चरित्र का व्याख्या कर सकते हैं। यशपाल जी ने इसी दो मायबड़ों का इस्तेमाल करके पराया सुख कहानी की रचना की है।

पराया सुख कहानी के दो प्रमुख पात्र मिस्टर सेठी और अर्मिला हैं। सेठी अंधाड्डम का आविवाहित पुरुष है और अर्मिला संव्यक्मील मध्यवर्गीय विवाहिता स्त्री। यह कहानी उसकी और उसके परिवार सामान्य सतुष्टि की स्थिति की ओर इशारा करती है, जो हर एक मध्यवर्गीय में भूल कमजोरी की रूप में विद्यमान है। एक ओर यहाँ मिस्टर सेठी जैसे उनके लोग हैं, जो अपनी मेहनत और सीपना बड़ा तरीके से सफलता को प्राप्त कर आर्थिक उन्नति करता है। परंतु जीवन में मिली तमाम आर्थिक सफलता के बावजूद मिस्टर सेठी को अपनी बेचारी और प्यारीयता मालूम होती है क्योंकि वे गृहस्थी सुख से वंचित हैं। इसी और सामान्य जीवन जीने वाली अर्मिला आर्थिक उन्नति व सतुष्टि की तलाश करती है।

वस्तु और विषय की दृष्टि से पराया सुख कहानी का विश्लेषण :- लेखक एक ओर मला के क्षेत्र में सक्रिय होता है तो दूसरी ओर अपनी साहित्य के माध्यम से नये-नये



नये प्रतिमान गढ़ता है। प्रगतिवादी लेखक समाज की प्रगति  
गढ़नी पसचा सुख वस्तु और भिला की दृष्टि से निरालिखित  
कालों को उद्घाटित करती है—

## व्यंग्य और सामाजिक विसंगतियों का उद्घाटन

यशपाल कहानियाँ में भाषा की अभिव्यक्ति सरल एवं सहज रूप से मिलती है। उनकी  
वेद सरल और आम धनक्रम केंद्रित रही है। अपनी कहानियों के  
माध्यम से जहाँ उन्होंने पाखंड पर हल्के ठुलके व्यंग्य किये हैं,  
जैसे कि लखनवी झंझट तो वही दुख का अधिकार गढ़नी के माध्यम  
से सामाजिक विसंगति का उद्घाटन है।

## शब्दों का समन्वित प्रयोग

उन्होंने अपनी कहानियों में दूसरी  
भाषाओं जैसे उर्दू, अंग्रेजी, अरबी, फारसी आदि भाषाओं के शब्दों  
का प्रयोग करने से परहेज नहीं किया है। उनकी कहानियों  
में एक ओर जहाँ संस्कृत भाषा के शब्द मिलते हैं वहीं दूसरी ओर  
उर्दू भाषा के शब्दों का भी भरमार रहता है।

## सामाजिक जीवन पर केंद्रित

यशपाल की कहानियाँ आम जन  
जीवन से जुड़ी रही हैं। क्रान्तिवादी गतिविधियों में भाग लेने के  
लावभूद उनकी कहानियाँ सामाजिक जनजीवन केंद्रित रही हैं। उन्होंने  
साधारण जनता के दुख, दर्द और संघर्षों को अपनी कहानियों  
में प्रतिबिम्बित के साथ अभिव्यक्त किया। लक्ष्मी का पाँद पहाड़  
की ओर हो गया, समय जातने का कोई उपमा व पा परंतु  
आधी से अधिक रात बीत चुकी थी। जाड़े से दोनों काप  
रहे थे। आर्म्हा के लिए यह सब व ची की उसकी वजह से



जाड़े में इस तरह मरे, हो सकता है कि वह बिमारी हो हो जाए?

## मध्यवर्गीय की मानसिकता का विभाजन

यशपाल की कहानियों में स्पष्ट रूप से मध्यवर्गीय मानसिकता के वर्णन होते हैं। अपनी कहानियों द्वारा यशपाल जी एक ओर यदि मध्यवर्गीय की रुढ़ियों और परंपरागत संस्कारों पर चोट करते हैं, वहीं वे औद्योगिक विध्वंसों और वर्णवादी की अन्तर्निहित नरकें स्वस्थ, वैज्ञानिक और समाशांतक दृष्टिकोण के निर्माण पर बल देते हैं।

## संबंध का साँझ में परिवर्तित होना

परमा सुख आत्मालोक को अलौकिकता करती है। भावना के स्तर पर चीजों को समझने की संवेदना के जगहों की मानसिकता में स्त्री देह को पग में करता महत्वपूर्ण है वही प्रेम की परिधि में संबंध कायम करता। परमा सुख में संबंध बनाना उद्देश्य नहीं बल्कि साँझ का पल है। बाहिर है सीढ़ी के आसपास में मनुष्यों का चरित्र बदल जाता है। वह मनुष्य व रहस्य कम विकसित केंद्रित वस्तु में लकीर हो जाते हैं।

## आस्तित्व बोध का अहसास

यशपाल की गहरी परमा सुख मध्यवर्गीय संकुचित दायरे और मध्यवर्गीय लौकिकता को सच्चाई को सच्चाई को रेखांकित तो करती ही है, सामंतवादी और पूंजीवादी सोप के अमानवीय शोषण के तरीकों को भी उजागर करती है। साथ ही यशपाल जी मानव में आस्तित्व बोध का अहसास और चेतना के विस्तार को भी स्पष्ट करते हैं।



## महयुग के आँखें और खोखलपन का चित्रण

यशपाल परमा सुख कदवी के माध्यम से दर्शाते हैं कि महयुग का कथाकार अपने स्वार्थ और झूठे मूल्यों की वर्धमान दिन-ब-दिन किस तरह अमानवीय और खोखला होता जा रहा है इसे भी इस कदवी में भी ही सुवसूती के साथ प्रस्तुत किया गया है। जिस आदमी ने बिना पछसान ज्ञार्थ अपने जीवन भर एक परिश्रम की लड़ाई इसे भेंट कर दी, अपने लिए कुछ भी नहीं चाहा उसकी बात चाहिए जो भी हो .... उसे निराशा करना ....।

## सद्व्य व पात्रावकूल भाषा शैली

यशपाल की कथानिका में विचार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। उसी विचार के अनुरूप वे पात्रों की आवतारण करते हैं। "परमा सुख" कदवी रचना-प्रक्रिया की दृष्टि से एक प्रतिनिधि कदवी है। इस कदवी में विचार ही मुख्य रूप से महत्वपूर्ण है। यशपाल विचार के अनुरूप पात्र, स्थितियाँ और भाषा का चुनाव करते हैं।

सड़क सुबह ही खुल गई थी परंतु चाय की लेने के बाद ही चलने का विचार हुआ।

संझी ने पूछा - रात खूब नींद आई ? और हँस दिया।

उर्मिला ने मुस्कराकर कहा - आपको तो जरूर आप होगी ? दोनों समझ गए कि नींद किसी को भी नहीं आई।

सारांश रूप में कहा सकते हैं कि हिंदी साहित्य के यशस्वी कथाकार यशपाल जी की 'परमा सुख' की अगली एक प्रतिनिधि कदवी माना जा सकता है। उन्होंने प्रेमचंद की समृद्ध विरासत



को आगे बढ़ाया। यशपाल जी इस कहानी के माध्यम से  
मध्यमवर्गीय जीवन की परिस्थितियों और परिवर्तनों तथा भारतीय  
क्षेत्रीय व्यवस्था से अपनी शोषण की विभिन्न प्रवृत्तियों को  
को कलात्मकता के साथ हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं परन्तु  
मुख्य कहानी मध्यमवर्गीय संकुचित दायरे और मध्यमवर्गीय  
नैतिकता की सच्चाई को रेखांकित करती ही है, सामंतवादी  
और क्षेत्रीयवादी सोच के अमानवीय शोषण के तरीकों को भी  
करती है। सहज सर्वदना और कष्टमिष्य में अनिश्चयता होता  
परन्तु मुख्य कहानी ने केवल तत्कालीन समाज की पुनः  
स्थितियों को सूक्ष्म और सटीक रूप से अनिश्चयता करता  
है वरन् समकालीन परिस्थितियों और परिवर्तनों को भी  
उद्घाटित करता है। भदिर एक मकान आदि के विधिवत् निर्माण  
का नाम है - वास्तु एवं शिल्प। वास्तु एवं शिल्प का अर्थ  
बनाने की कला अर्थात् मकान या भदिर को शास्त्रोक्त विधि  
से बनाने की कला वास्तु शिल्प संबंधी शास्त्र कहलाते हैं।  
यूँ तो प्राचीन काल से ही युग की आदि में भगवान्  
[ऋषभदेव] ने इस धर्ती पर मानव को कर्मभूमि की जीवन  
जीवन की कला के अन्तर्गत घर बिल्वाएँ खिचवाई थीं। उसमें  
शिल्पकला के अन्तर्गत भदिर-मकान आदि सब कुछ बनाने  
की विधि थी, इसी विधि के अनुसार इतने निर्माण होते चले  
आ रहे हैं, फिर भी वर्तमान में वास्तु शिल्प का प्रयत्न  
कुछ अधिक ही हो गया है। वास्तुविद्या जहाँ मनुष्य के लिए  
सुख-शांति का आधार मानी गई है। वास्तुविद्या जहाँ मनुष्य  
के लिए सुख-शांति का आधार मानी गई है, वही कभी-  
कभी कुछ अधिक-चरें शिल्पियों के द्वारा उसका दुस्प्रयोग  
किये जाने के कारण आज अनेक परिवार एवं समाज  
को दुखी और अशांत देखे जाते हैं।



(ख) ब्रिटेन में कहानी के विकास को रेखांकित कीजिए।

- ब्रिटेन में भी सही भाषा, आधुनिक कहानी का आविर्भाव ठीकसीरी बतावरी में ही हुआ। सर वाल्टर स्कॉट ने अपनी कहानियाँ 'मे स्तिहास की पुनर्प्राप्ति की। ठीकी कहानियाँ ने लोकप्रिय भाषा की उस ध्वनि को गवा जिसका असर ब्रिटेन और ब्रिटेन के बाहर अनेक कहानीकारों के मन में लगे समग्र तक रहा।

कहानी एक आधुनिक गद्य विधा है और यह जीवन के यथार्थ की गलात्मक पुनर्स्थापि करता है। कहानी की अपनी निजी विशेषताएँ होती हैं। इन निजी विशेषताएँ का निर्माण करने में यूरोप की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। फ्रांस, ब्रिटेन, जर्मनी, रूस, इटली और यूरोप के अन्य देशों ने कहानी की पदा और देश के निर्माण तथा स्थिति में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यूरोप में कहानी ने उस मौखिक परंपरा से जोड़ा जाता है। जिसने दारा के महाकाव्य दानियाड और ओडिसी का सूत्रपात किया।

ब्रिटेन में कहानी का विकास

ब्रिटेन के कहानीकारों ने विश्व साहित्य में कहानी विधा को प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। ब्रिटेन सही भाषा में आधुनिक कहानी का आविर्भाव 19वीं बतावरी में हुआ। ब्रिटेन में कहानी को एक लोकप्रिय विधा के रूप में स्थापित करने का श्रेय वाल्टर स्कॉट की जाता है। स्कॉट ने स्तिहास का आधार बनाकर जो कथा - साहित्य रचा, उसने आगे आने वाली कथा - लेखन की पीढ़ी को ऐतिहासिक दृष्टि अपनाने को प्रेरित किया। वॉल्टर स्कॉट के प्रमुख कहानी संग्रह हैं - वांडरिंग विजय टेल ,



ऑफ़ कैन-मैट, डेफ ऑफ़ द जेम्स जॉक, द टेम्पेस्ट  
चेंबर आदि। इसी समय रॉबर्ट लुई स्टीवेसन ने रहस्य रोमांच  
से भरपूर कहानियाँ लिखकर विद्वान में कहानियों के पाठ्यपत्र  
को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। द न्यू अरेबियन  
नॉईस, मोर न्यू अरेबियन नॉईस उनके प्रमुख कहानी  
संग्रह हैं।

19वीं शताब्दी में ब्रिटिश कहानी को परिपक्व व  
परिष्कृत बनाने का श्रेय चार्ल्स डिकेन्स को जाता है। 18-वीं  
कहानी में सामाजिक व्यथिवाद को प्रतिष्ठित और लोकप्रियता  
दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। कहानी विद्या में डिकेन्स ने  
नये नये प्रयोग किया। 19वीं ब्रिटिश समाज में व्याप्त कुरीतियों  
पर खुलकर प्रहार किया। डिकेन्स ने कहानियों और उप-माध्यम  
के माध्यम से अपने समाज की जो आलोचना की उसको  
ब्रिटेन पर व्यापक प्रभाव पड़ा। उनके द्वारा गढ़े गए चित्र आज  
भी स्मरणीय हैं।

डिकेन्स की व्यथिवादी परंपरा को अपनी कहानियों में  
अन्टोनी बेन्ट ने आगे बढ़ाया। उन्होंने 'कहानियाँ' में आपत्तिजनक  
को प्रतिष्ठित किया। विद्वान के आन्तरिक जीवन के सूक्ष्म विवरण,  
वातावरण की यथार्थ अभिव्यक्ति, पात्रों का संपर्क, माँती परंपराओं  
और अतीत वर्तमान संबंधों का प्रभाविक चित्रण बेन्ट की  
कहानियों में उपस्थित होता है। ब्रिटेन में जहाँ एक ओर डिकेन्स  
जैसे लेखक सामाजिक परिवर्तनाओं के कार्य करण संबंधों  
की तफ़्तीश अपनी कहानियों में कर रहे थे। वहीं दूसरी ओर  
कावले डॉयल जैसे लेखक हल्का और आराधनी गुपी को  
शुद्ध मन में लगी गहरा संबंधों की भूमिका को अपनी कहानियों



में आपत्तिगता को प्रतिष्ठित किया। विद्वानों के आपत्तिक जीवन के सूक्ष्म विवरण, वातावरण की अपार आभिव्यक्ति, चरित्रों का संघर्ष, मोती परंपराओं और अतीत काल मानवीय संबंधों का प्रभावित प्रभाव वेब्ट की कहानियों में उपस्थित होता है। विद्वानों में जहाँ एक ओर डिफेंस जैसे लेखक सामाजिक परिवर्तनों के कार्य कारण संबंधों की तत्वीय अपनी कहानियों में कर रहे थे। वहीं दूसरी ओर कालन डायल जैसे लेखक रसा और अपराध को गुल्पी को सुलझाने में कार्य कारण संबंधों की भूमिका को अपनी कहानियों का विषय बना रहे थे। जासूसी कहानी की इस परंपरा का आगाध क्रिस्टी जैसे लेखकों ने आगे बढ़ाया।

कुछ समय पश्चात किरकिरी जैसे महान लेखकों का ब्रिटिश कहानी के क्षेत्र में आगमन होता है। जिन्हें कहानी विद्या में विशेष महारत हासिल थी। कहा जाता है कि किरकिरी ने कहानी में जीवन के हजारों पहलुओं को अलग अलग तरह से ऐसे कुछ हुआ कि वह हर काल के कहानी लेखकों के लिए अनुकरणीय बन गया। उनकी प्रमुख कहानी संग्रह हैं द जर्जल बुक, द मैन दू गुड बी किंग, द सेकंड जर्जल बुक आदि।

विद्वानों के सुप्रसिद्ध लेखक जी.एच. लॉरेन्स और जेम्स ज्वायस की कहानियों में 20वीं सदी का मनुष्य आकार लेता है। जी.एच. लॉरेन्स ने अपनी कहानियों में यौन मनोविज्ञान जैसे कम प्रचलित विषय को गहन तीव्रता और साहस के साथ प्रतिष्ठित कर, प्रचलित नैतिक मानदंडों को लच्छरो में रखा किया। इसी तरह जेम्स ज्वायस ने कहानी विद्या में क्रांतिकारी परिवर्तन किया। उन्होंने शिल्प के क्षेत्र में व्यापक प्रयोग किया। सही मायने में जेम्स ज्वायस विद्वान कहानी में आधुनिकतावाद के प्रतीक माने जाते हैं।



एवलीन वॉ न आधुनिक जीवन की आध्यात्मिक रिक्ता को आधार बनाकर कहानी लिखी। उनकी कहानियाँ व्यंथ की तम धार तथा मानवीय प्रकृति के अधम पक्ष और 20वीं शताब्दी के भय एवं आवेगों के चित्रण के लिए जानी जाती हैं। एवलीन वॉ की प्रमुख कहानी मिस्टर लवडेज मिलिन आउटिंग और टैक्निकल एक्सपोजिशन आदि हैं।

20वीं शताब्दी में विज्ञान प्रौद्योगिकी के अभूतपूर्व विकास ने विज्ञान आधारित कथा साहित्य को पनपने का पर्याप्त अवसर दिया। विज्ञान आधारित कहानियों के लेखक के रूप में एच. जी. वेल्स और आर्थर सी. क्लर्क को काफी प्रतिष्ठा मिली। दोनों लेखकों की प्रमुख चिंता यह थी कि विज्ञान की निरंतर प्रगति और उसके स्वतन्त्र प्रयोग के बीच मानसता का भविष्य कैसा होगा। एच. जी. वेल्स का विश्वास था कि मानव जाति का समूह बस ही जाएगा वही आर्थर सी. क्लर्क का विचार था कि मानव जाति गए किस्म के अधिक सक्षम प्राणियों में समांतरित हो जाएगी।

20वीं शताब्दी में जीवन की यांत्रिकता, नैतिक स्वच्छता, युद्ध की भयानकता और तबाही तथा अपसाद व अजनबीपन ने कुछ कहानीकारों को व्यंथ के रूप की तरफ मोड़ दिया जिसमें डॉक ह्यूमर कहा जाता है। डॉक ह्यूमर के अंतर्गत मानवीय पतन और त्रासदी की कहानियों को व्यंग्यात्मक लहजे में प्रस्तुत किया जाता है। डॉक ह्यूमर की कहानियों के लेखक के रूप में रोल्ड डाल्टन को काफी प्रतिष्ठा मिली। डाल्टन की प्रमुख कहानी है समवन लास्क यू, ओवर द यू, स्केप विथ इत्यादि। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ब्रिटिश कहानी में समवन में व्यापक परिवर्तन हुआ।



अब कहानी और अधिक सूक्ष्म एवं स्टीक रूप से चरित्रों को अभिव्यक्त करने लगी। जॉन गाल्सवर्थी की कहानियाँ गहरी मनोवीच संवेदनाओं को प्रस्तुत करती हैं। उनका कहानी संग्रह, 'दि कैंपन' अंग्रेजी में कहानी के अत्यंत उच्च स्तर का हमें परिचय मिलता है। ब्रिटिश कहानीकार आल्डस हक्सले अपनी कहानियों में मनुष्य के चरित्र पर व्यक्त अने आधार करते हैं।

ब्रिटिश कहानी में लेखिकाओं की समृद्ध परंपरा रही है। अग्राथा क्रिस्ती और पी. डी. जेम्स जैसी लेखिकाओं ने जासूसी एवं रहस्य रोमांस से भरपूर विषयों पर कहानियाँ लिखी। अने लेखिकाओं ने साहित्य से दमित और शोषण वाली नी आशाओं, आकांक्षाओं और पिताओं को अपनी-अपनी कहानियों में स्वर दिया। कैथरीन ग्रैव्सकीन्स ने अपनी स्त्री चरित्र की भावनाओं और कथानकों को अभिव्यक्त करने के लिए कहानी की प्रचलित व्याख्याओं को तोड़ते हुए सटीक विवेक और व्यापार सेवाओं का प्रयोग किया। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं - 'हिलेस', 'द गार्डन पार्सि', 'द लिटिल गल' आदि। इन्हे ड्यू मॉरियो की कहानी स्त्री मनोविज्ञान को सूक्ष्मता व स्टीकता से संकेधित करती है। इन मॉरियो को स्त्री पुरुष की विभिन्न मनोदशाओं और उससे उत्पन्न होने वाले तनाव का चित्रण करने में महारत हासिल थी। इन तनाव ने उनकी कहानियों में रहस्य और रोमांस को विभित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। मॉरियो की कहानियाँ मुख्यतः रहस्य प्रधान हैं मगर यह रहस्य स्त्री चरित्र की मानसिक दुविधाओं को बखूबी प्रस्तुत करता है। उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं - 'द क्विस्', 'कम विड', 'कम वेदर', 'हैपी क्रिसमस', 'अर्ली स्लोरीज' आदि।



विदेन की सुप्रसिद्ध लेखिका डोसिस लेसिंग की गहरी मानवीय अनुभव में निहित शिक्षाप्रद मूल्य की खोज करती और संस्थाओं तथा सामाजिक बंधनों का मूल्य के मानस पर पड़ने वाले प्रभावों का अन्वेषण करने के लिए विख्यात हैं। ज्यों हीस की गहरी बेरोजगारी और झुकेली स्त्री की पिताओं का यथार्थ चित्रण करती हैं। पाउना और ब्रामन और वरिल बेनब्रिज द्वितीय विश्वयुद्धोत्तर ब्रिटिश कहानी का प्रमुख लेखिका हैं। उन्होंने अपनी कहानियाँ निम्न अपनी कहानियों में जीवन की जटिलताओं को व्यक्त किया। पाउना और ब्रामन और वरिल बेनब्रिज की कहानियाँ निम्न वर्ग के लोगों के संघर्ष, उनके जीवन की विचंगतियाँ, असंतोष और त्रासदियाँ का विश्वसनीय चित्रण करती हैं। स्वयं प्रवेश छाववाला न भारत और पश्चिमी देशों की सांस्कृतिक मुठभेड़ को अपनी कहानियों का विषय बनाया। उनकी कहानियाँ दर्शाती हैं कि भारत और पश्चिम के बीच सघर्ष मध्य रेंगभेड़ के कारण नहीं बल्कि उसकी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और मनोवैज्ञानिक जटिलताओं में निहित है।

संक्षेपतः कह सकते हैं कि यद्यपि गहरी का उद्भव अमेरिका में हुआ तथापि इसका विकास यूरोपीय देशों में हुआ। विदेन ने गहरी का विभाजित व विस्तृत कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। प्रारंभ में विदेन की अधिकांश कहानियाँ व्यक्तिप्रधान, मनोरंजनवादी और जासूसी रहस्यों से परिपूर्ण थी। वर्तमान समय में अंग्रेजी गहरी भाव-यंत्रित के निष्कर्ष रूपों पर ध्यान केंद्रित करती है। इसके कारण युद्ध का संगत, पाश्चात्य जीवन की विशेष विशृंखलता और मानवीय मूल्यों का विध्वन हो। भिक्षु की दृष्टि से आज गहरी का पर्याप्त परिभाषित हो चुका है, किंतु साथ ही उसके भीतर निहित मूल्यों का हास भी हुआ है।



1) विविध भारतीय भाषाओं में आधुनिक कहानी के सूत्रपात पर प्रकाश डालिए।

— आधुनिक कथात्मक गद्य पहले पहले उपन्यास के रूप से प्रस्तुत हुआ। आधुनिक उपन्यास का प्रथम पदार्पण भी हमारे साहित्य की नवजागरण की देन है। कहानी का आगमन उसके बाद पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ शुरू हुआ। नवजागरण कालीन परिस्थितियों और परिवर्तनों ने आधुनिक कहानी के निर्माण को संभव बनाया। आधुनिक कहानी की शुरुआत न केवल भारतीय भाषाओं में बल्कि विश्व भर की भाषाओं में पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन की शुरुआत से जुड़ी है। यूरोप और अमेरिका की तरह भारत में भी कहानी के विकास में पत्र-पत्रिकाओं का हाथ रहा है।

विविध भारतीय भाषाओं में आधुनिक कहानी का सूत्रपात प्राचीन भारतीय में संस्कृत भाषा के सांस्कृतिक, साहित्यिक और सामाजिक परिस्थितियों व प्रवृत्तियों को समाज तक पहुँचाने का कार्य किया। वर्तमान समय में आधुनिक भारतीय भाषाओं ने जनसाधारण तक पहुँचाने के दायित्व का निर्वहन किया। इस दौरान साहित्य में अनेक नवीन विधाएँ प्रारंभ हुए। इन विधाओं में कहानी का एक लोकप्रिय विधा के रूप में सूत्रपात हुआ।

## बंगला भाषा में कहानी

बंगला साहित्य में सक्रिय चंद्र चटर्जी द्वारा लिखित कहानियों से आधुनिक कहानी की शुरुआत की जा सकती है। बंगद्वीप पत्रिका में पूर्वपट्ट चट्टोपाध्याय की कहानी मधुमती प्रकाशित हुई। इसमें स्मृतिदाप की रोमानी कथात्मक है। इसी समय रविद्रनाथ टैगोर की भी



ग) विविध भारतीय भाषाओं में आधुनिक कहानी के सूत्रपात पर प्रकाश डालिए।

- आधुनिक कथात्मक गद्य पहले पहले अंग्रेजी के रूप से प्रस्तुत हुआ। आधुनिक अंग्रेजी का प्रथम पदार्पण भी हमारे साहित्य को नवजागरण की देन है। कहानी का आगमन उसके बाद पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ हुआ। नवजागरण कालीन परिस्थितियों और परिवर्तनों ने आधुनिक कहानी के निर्माण को सभव बनाया। आधुनिक कहानी की शुरुआत न केवल भारतीय भाषाओं में बल्कि विश्व भर की भाषाओं में पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन की शुरुआत से हुई है। यूरोप और अमेरिका की तरह भारत में भी कहानी के विकास में पत्र-पत्रिकाओं का हाथ रहा है।

विविध भारतीय भाषाओं में आधुनिक कहानी का सूत्रपात प्राचीन भारतीय में संस्कृत भाषा ने सांस्कृतिक, साहित्यिक और सामाजिक परिस्थितियों व प्रवृत्तियों को समग्र रूप में पकड़ने का कार्य किया। वर्तमान समय में आधुनिक भारतीय भाषाओं ने जनसाधारण तक पहुँचाने के दायित्व का निर्वहन किया। इस दौरान साहित्य में अनेक नवीन विधाएं प्रारंभ हुए। इन विधाओं में कहानी का एक लोकप्रिय विधा के रूप में सूत्रपात हुआ।

## बंगला भाषा में कहानी

बंगला साहित्य में सक्रिय चंद्र चर्जी द्वारा लिखित कहानियों से आधुनिक कहानी की शुरुआत की जा सकती है। बंगदर्शन पत्रिका में पूर्वपद चंद्रोपाध्याय की कहानी मधुमती प्रकाशित हुई। इसमें स्मृतिदाप की रोमानी कथात्मक है। इसी समय रंजितनाथ टैगोर की भी



कहानी प्रकाशित हुई। कर्मभयंकर, चरित्र, रविंद्रनाथ टैगोर, बाबू चंद चट्टोपाध्याय, आशापूर्ण देवी और महाश्वेता देवी जैसे रचनाकारों का वर्णन कहानी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

## ओड़िसा भाषा में कहानी

फकीरमोहन सेनापति की उक्त दीपिका नामक पत्रिका में प्रकाशित लक्ष्मीनिरा नामक कहानी को शायद पहली आधुनिक भारतीय कहानी होने का श्रेय दिया जा सकता है। फकीरमोहन सेनापति की ही रेवती नामक कहानी को ओड़िसा की पहली कहानी माना जाता है। इसमें आकांक्षा और प्रयत्नित अंधविश्वास के बीच की हुई एक विप्लव आनीष बला के दुस्वद जीवन का गपार्थ चित्रण किया गया है।

## भराठी भाषा में कहानी

भराठी में लाल प्रसाक नामक पत्रिका में प्रकाशित उपदेश कथाओं को आधुनिक भराठी कहानी का आरंभ कहा जा सकता है। भराठी के मनोरंजन आनी विविध पत्रिका में प्रकाशित एक भांजरावे साधनपण और हरीनारायण भास्ते के संपादन में कच्छाणूक नामक पत्रिका में प्रकाशित कथाओं में आधुनिक कहानी की शुरुआत होती नजर आती है।

## गुजराती भाषा में कहानी

गुजराती में दत्त राम दास लिखित कई कहानियाँ वहीनी मुक्ताब्दू में संग्रहित हैं। ललित वस्तुतः



प्रकाशित काल्पनिक गद्य के आरंभिक नमूने ही माना जा सकता है। इसके अलावे अंबाबाल शंकरबाल देसाई की कहानी श्रुतिदास में कहानीपत्र का कुछ आभास मौजूद है। इसमें आभीर वस्तुकारों के जीवन की बदलती परिस्थितियों और विदेशी वस्तुओं के बजार में लगे जाने से उत्पन्न आपीविका की कठिन समस्याओं तथा विदेशी सरकार की आर्थिक नीतियों के कारण देश में मानवीय दुर्दशा और असहायता पर प्रकाश डाला गया है।

### विदेशी भाषा में कहानी

आधुनिक कहानी के सूत्रपात में विभिन्न विदेशी भाषाओं का भी योगदान रहा है। रेवरेंड जे. न्यूटन द्वारा लिखित एक जमींदार का दृष्टान्त नामक कहानी को आधुनिक कहानी माना जा सकता है। इसमें किसान के साथ जमींदार के व्यवहार का काल्पनिक है।

### हिंदी भाषा में कहानी

हिंदी में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने पहले पहल की कहानियों का चित्र करते हुए सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित किशोरीबाल गोस्वामी द्वारा लिखित इंदुमती में गुलबहार अण्णकपास द्वारा लिखित जंग की चुड़ैल, गिरजाधर वाजपेयी की पंडित और पंडितानी, बंग महिला की दुर्भाग्यवती को आधुनिक हिंदी की आरंभिक कहानियाँ में शामिल किया। इसमें शुक्ल जी के द्वारा स्वयं लिखित कहानी ग्यारह वर्ष का समय को भी शामिल किया। इसमें शुक्ल जी के द्वारा स्वयं लिखित कहानी ग्यारह वर्ष का समय को भी शामिल किया जा सकता है। परंतु कालांतर की खोज से यह साबित हुआ कि छत्तीसगढ़ मंत्र पत्रिका में प्रकाशित माधवराव सप्रे द्वारा लिखित टोकरा अरु मिट्टी को हिंदी



की प्रथम कहानी माना जा सकता है। ये कहानियाँ जीवन निरूपित लेखनी अरु मिट्टी की हिंदी की प्रथम कहानी माना जा सकता है। ये कहानियाँ जीवन के प्रति एक आधुनिक दृष्टिकोण से प्रकाशित, वैविध्य और स्वात्मिक शक्ति से भरपूर हैं।

आधुनिकता : उपदेशात्मक प्रवृत्ति के हान के साथ-साथ इसमें अल्प मात्रा में चरार्थ का भी तत्व उपस्थित होता है।

### उर्दू भाषा में कहानी

उर्दू में आधुनिक कहानी का प्रारंभ प्रेमचंद और उनके समकालीन सज्जाद हंस, यमदश तथा नियाज कर्तव्यूरी के लेखन से हुआ। सहादत हसन मंते, फिरोक गोरखपुरी, केज अहमद फैज आदि लेखकों की कहानियों से आधुनिक कहानी का गुरुआत होती है।

### पंजाबी भाषा में कहानी

पंजाबी भाषा की मौखिक कहानी की परंपरा है जो स्थानीय लोगों, अखण्ड प्रायद्वीप के प्रवासियों और समकालीन देश के प्रवासियों के मिश्रण के साथ दक्षिण पश्चिम में आई है। इसमें प्रेम, वीरता, सम्मान और नैतिक अखंडता आदि विषयों पर लोकप्रिय कहानियाँ ली जाती हैं। मोहनसिंह की लिखी कहानियों के साथ पंजाबी में कहानियों की गुरुआत होती है।

### कन्नड़ भाषा में कहानी

कन्नड़ साहित्य में मधुखावी नामक पात्रिका में प्रकाशित भूती वेंकटेश आम्गार की कहानी को पहली कहानी माना जाता है। यद्यपि इससे पूर्व सुहासिनी नामक पात्रिका में पाँचे अंगेशाख द्वारा निरूपित भारत श्रवण नामक कहानी प्रकाशित हो चुकी थी। यू. आर. अनंतमूर्ति, सुमतीन्द्र नाडिंग, उमा शिव, वी. के



त्रिभुवन और आदि आदि लेखकों की कहानियों से न-न-न भाषा में आधुनिक कहानी की शुरुआत होती है।

## तमिल भाषा में कहानी

तमिल भाषा में टी. टी. एस. अय्यर के भक्तिकालीन काव्य नामक कहानी संग्रह के प्रकाशन के साथ कहानी का आरंभ माना जाता है। पुडुचेरीपिल्लन, न. पार्थसारथी, वेंडपाणी जयकांतन, अरविन्द और भगवत रामचन्द्रन आदि लेखकों की कहानियों ने तमिल भाषा में आधुनिक कहानी की शुरुआत की।

## तेलुगु भाषा में कहानी

श्री आचार्य कृष्णदेवराय और कवि व विद्वान् तेलुगु रामकृष्ण की आदर्श व संदेश परक कथाओं से तेलुगु कहानी प्रारंभ होती है। तेलुगु में प्रथम कहानी के लेखन का श्रेष्ठ गुणवत्ता आधार और अविनाश केन्द्र सांस्कृतिक संस्था का जाता है। कन्धुकुरि वीरेशलिङ्गम् पन्तुलु, श्रीपदहोमर्ति: आरुत्री, चित्तादीक्षितम्, पालभुक्तिपहासम् और विश्वनाथ सत्यानारायण आदि लेखकों की कहानियों ने तेलुगु की आरंभिक कहानी माना जाता है।

## मलयालम भाषा में कहानी

मलयालम की पहली कहानी वास्तविकता में एक नौजवान-योर और उसकी गिरफ्तारी का वृत्तान्त हैसमुरव डीजी में किया गया है। तक्षी श्रीवंगर, पिल्लै, एम. टी. वासुदेव नायर, एस. के. पोद्देक्काट आदि लेखकों ने मलयालम भाषा में आधुनिक कहानी का श्री गणेश किया।



सारतत्व के रूप में कहा सकते हैं कि आधुनिक काल के आगमन के साथ-साथ भारतीय भाषाओं में आधुनिक काल के सूत्रात होता है। आधुनिक युग की कहानियों पर संस्कृत और अन्य भाषाओं से अव्युत्पन्न कहानियों का स्पष्ट प्रभाव पड़ा। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से सर्वांगीण है। कहानी के उद्भव और विकास में भारत की प्राचीन कथाओं, भारतीय कथा साहित्य पाश्चात्य कथा साहित्य लोक कथा साहित्य का सम्मिलित प्रभाव है। आधुनिक काल में हिंदी, उर्दू, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, मराठी, गुजराती, ओड़िया, बांग्ला आदि विविध भारतीय भाषाओं में अनेक दुर्लभ कहानियाँ हैं। कहानी के तत्व अपरिपक्व रूप में व्यक्त होती हैं जो कालांतर में परिपक्व और परिष्कृत होकर सूक्ष्म व सटीक होती हैं।

मानव समाज में कहानी कहने-सुनने की परंपरा बहुत ही प्राचीन है परंतु हिंदी के अन्य गद्य विद्याओं की भांति हिंदी कहानी भी आधुनिक युग की देन है। कहानी आधुनिक साहित्य का अत्यंत ही लोकप्रिय साहित्य रूप है। हिंदी साहित्य के इतिहास लेखकों और समीक्षकों ने कहानी के आरंभ और विकास का लेकर विभिन्न कल्पनाएँ की हैं। ऐसा कहा जाता है कि दशक के भाग में कहने के लिए समय  $\frac{2}{3}$  पर जिसने भी साहित्य रचा वह उस दुर्लभ कहानी निरखी न मिली रूप में विद्यमान थी। चाहे वे महाकाव्य, प्रबंध काव्य तथा नाटक ही क्यों न हों। अतः कहानी का उद्भव और विकास बहुत दूर बहुत विस्तार पूर्वक है।



Page 19  
यहाँ नई कहानी और सोशलिस्ट कहानी के लिए यह किंवदन्ती प्रयोगों की चर्चा की जाएगी।

प्रयोग युग की अधीन दृष्टि और रूढ़ि होती है। जवानी परिवर्तन में जिसे दृष्टि का विकास होता है, उसे धेरित होकर ही सामहित्य-रूढ़ि के नये आविर्भाव प्रस्तुत होते हैं। कवि की सामहित्य युग - विरोध नहीं रह पाता है। उसके मूल में इतिहास और जीवन, परिवेश और वातावरण तथा परम्परा व प्रगति की नयी आंखों से सर्वत्र स्फुटित होती है।

नयी कहानी :-

स्वातन्त्र्योत्तर भारत में लोगों की आशा निराशा में और खलन मोहभंग में परिवर्तित होने लगा जिसने सामान्य जनता व साहित्यकारों को निश्चिन्ता बोध से भर दिया। इसी समय शहरीकरण से उत्पन्न अकेलेपन और अवगाह जैसी समस्या ने उन्हें संबंधहीन, एकाकी व निश्चिन्ता जीवन पर मजबूर किया। इन परिस्थितियों ने सामाजिक व व्यक्तिगत स्तर पर व्यापक परिवर्तन किया, इसी प्रवृत्ति को नयी कहानी ने अपना विषय वस्तु बनाया। नयी कहानी के लेखक मानते हैं कि - "समाज कहानी का दीपक नहीं बल्कि दर्पण बन गई। जिसमें अतीत और अविष्य नहीं बल्कि वर्तमान प्रतिक्रियित होता है। कहानीकार का अपना सुख-दुःख ही कहानी का सुख-दुःख बन गया।"

नयी कहानी से तात्पर्य इस कहानी से है जो सन् 1960 ई. के आरंभ-पार से नये युग-बोध के रंग में रंगी चर्चा की रेखाओं से लिखी गयी है। नयी कहानी की दृष्टि भी है। इस दृष्टि के वाहकों में कमलेश्वर, राजेन्द्र राय, मोहन राकेश, अमरनाथ बिर्मल वर्मा, मन्मू अडारी और मार्कण्डेय आदि का नाम शीर्ष पर स्थित है।



इस पीढ़ी के कालीकारों ने जीवन की विसंगतियों, विडम्बनाओं और तन्मयियों से सीधा सहाकार करके अपनी प्रामाणिक अनुभूतियों को प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि ये सभी नये कालीकार परिवेश से प्रतिध्वनित हैं। इसका भावना सज्ज है, और वे खुली हैं एवं प्रजा और संवेदना के स्तर सज्ज हैं। तभी तो ये मानवीय स्थितियों और सम्बन्धों को अपार की काल्पनिकता से उठेर सके हैं।

नयी कहानी में तत्कालीन जीवन और जगत् की जाटिल समस्याओं का चित्रण हुआ है। नयी नयी कहानी में समकालीन जीवन की आपक व विस्तृत जगत् को पहचान कर उसे अपने में समेट पाने में सफल हुई है। नयी कहानी के केंद्र में गहरी मध्यमता का जीवन है। गहरो में मध्यमता की अवलोकन, संभाव, अन्तर्निहित और निरर्थकता बोध को नयी कहानियों ने नयी ही मार्मिक और सूक्ष्म रूप से प्रस्तुत किया। नयी कहानी का सबसे प्रमुख विषय मानवीय संबंधों में विश्वास की समस्या है। बदलते, चलते और बिगड़ते रिश्ते तथा धातुमय प्रतीक्षा और आशावाद के स्वर नयी कहानी की संवेदना और शिल्प के माध्यम से प्रस्तुत होते रहता है।

## नयी कहानी में किछू गाढ़ शिल्पगत प्रयोग हिंदी कहानी की

संवेदना और शिल्प को आपक रूप से प्रभावित करने वाली और हिंदी कहानी की सबसे सशक्त धाराओं में से एक नयी कहानी ने नयेपन और उसमें किछू गाढ़ शिल्पगत प्रयोग इस प्रकार हैं—

भाषा की सचेत, सर्वजनिक और वैविध्यपूर्ण, लक्ष्य  
नयी कहानी में निरूपित नये भावनीय को स्वीकार करके सुप्रसिद्ध समीक्षक डॉ. रामवर सिंह लिखते हैं कि "नयी कहानी ने नयी



DATE 21  
Page 21  
जो चरित्र कहानी थी या कोई चरित्र पेश करती थी या एक विचार का झंझट देती थी वही 'निर्भर' के हाथों में जीवन के प्रति एक नया आवेग जगाती है .... दुर्लभ अनुभूति को प्रकट करती है।"

## आधुनिकता के लक्ष्य की विभिन्न भांगिमा

वही कहानी आधुनिक चेतना से संपन्न है। उसमें आधुनिकता समय की समस्याओं को गंवाए का विषय बनाया गया है। इसमें भोगे हुए यथार्थ पर चल, पारंपरिक मूल्यों में परिवर्तन, आधुनिक संवेदों का जीवन स्वरूप, नैतिकता की पुनर्स्थापना आदि विभिन्न भांगिमा परिलक्षित होती हैं।

## संकेतिकता

परिप्रेक्ष्य की जटिलता के विषय, यथार्थ के संदर्भ, सूक्ष्मांतिसूक्ष्म अनुभूतियों के प्रति जटिलता, संकेतिकता, रचना-तंत्र को नयी कुशल और प्रतीकात्मकी वृत्ति व विवेकपूर्ण दृष्टि वाली कहानी के प्रत्यक्ष गुण हैं। इसी विवेकपूर्णता के कारण नयी कहानी अनुभव का प्रामाणिक प्रस्तुतकर्ता बन गई है। वह यथार्थ अनुभव जतित संवेदना की लक्ष्य राह पर चल रही है।

## जीवन और सामर्थ्यपूर्ण अभिव्यंजना

मार्किंडेय के अनुसार — "नयी कहानी से हमारा मतलब उन कहानियों से है जो सत्य अर्थों में कालक्रम विभक्ति हैं, जो जीवन के लिए उपयोगी हैं और भविष्यपूर्व होने के साथ ही, उसके किसी न किसी नये पहलू पर आधारित हैं या जीवन के तत्वों को एकदम नई दृष्टि में दिखाने में सक्षम हैं..... जीनता इसमें नहीं है कि उसमें किसी अद्वैत भू-भाग के अजीब प्रभावों का वर्णन है, बल्कि इसमें है कि साधारण मानव



कहानी इसमें नहीं है कि इसमें किसी अद्भुत-भू-भाग के अजीब प्राणियों का वर्णन है, बल्कि इसमें है कि साधारण मानव में वह गौन या विरोध उत्पन्न है जो सामाजिक परिस्थितियों के परिवर्तन के कारण पैदा हो गया है, या बिना किसी परिवर्तन के भी जीवन का गौन सा बिना पड़ने है जो साहित्य में व्यक्त होता है। \*

## कथ्य और कल्प की लचीलता

कथी कहानियों में न तो सत्ताओं की कोई श्रृंखला मिलती है और न ही कोई निश्चित शुरुआत और अंत। कथक में विषय स्पष्ट रूप से दिखता है। कथी कहानी में जो कथ्य और कल्प की लचीलता है वह स्वातंत्र्योत्तर भारत की गतिविधियों का परिणाम है।

## साठोत्तरी कहानी :-

कथी कहानी आंदोलन के वर्ष की कहानी को सामान्यतः समकालीन कहानी कहें दिया जाता है। इसके अंतर्गत कई कहानी आंदोलन सीमित या व्यापक रूप में लिखते हैं। साठोत्तरी कहानी की प्रमुख धारा कथानी आंदोलन के रूप में 1960 के दशक में फ्रांस के 'एले स्टोरी मूवमेंट' से प्रभावित है। साठोत्तरी हिंदी कहानी में जीवन के प्रति अस्वीकार, अजनबीपन, निर्धनता, बोध परंपरा का पूर्ण नकार, भोज उन्मुक्तता, मिलन, कल्पित अभूतता जैसे तत्व हासिलोपर होते हैं। प्रमुख साठोत्तरी सिद्धांत 'रीड' व रवीन्द्र काव्यिका की 'नई साठ पत्नी' प्रमुख साठोत्तरी कहानी हैं। इसी प्रकार का एक आंदोलन समकालीन कहानी का है। आज आदमी को केन्द्र में रखकर इस कहानी ने सामल्लापदी, झुंजीवादी व सामप्रदायिक शक्तियों को एगोस्टिक यज्ञ को आग लगा दिया। कमलेश्वर नामल्लाप व इब्राहिम शरीफ इस धारा के महावीर हैं। आठवीं दशक का जनवादी कहानी आंदोलन सामने आया।



Page 23

एक कहानी 'सर्वहारा' पर लिखी जा रही शोध का क्रियान्वित करती हैं।  
हमसफर, वसाहत, सुख, पालनिक इस प्रकार के प्रमुख कथानीकार हैं।

साठोत्तरी कहानी के अंतर्गत अन्य चाराओं में प्रमुख रूप से  
सचेतन कहानी, सहज कहानी व साक्ष्य कहानी की पर्याप्तता जा सकती  
है। इन कहानियों में स्वातंत्र्य व वैयक्तिक भाव के सामाजिक-  
आर्थिक गंधर्षों को प्रस्तुत किया गया है। साठोत्तरी हिंदी साहित्य में  
जीवन और जगत् से जुड़ी प्रत्येक स्थिति-परिस्थिति को अत्यंत संपूर्ण  
रूप से चित्रित किया गया है। जीवन के इस कठु अंधकार का  
भावना करने में उसे जीव देकर तथा तबलों को खोलता पडा है,  
जिव जिव आरोहो-अरोहो से गुजरता पडा है, उसकी स्पष्ट धारा हमें  
साठोत्तरी साहित्य में दिखाई पडती है।

साठोत्तरी हिंदी कहानी में किण्व गण मिल्यगत प्रयोग <sup>अधुनिक</sup>

हिंदी कहानी की आविष्कार प्रवृत्तियों को समारहित करने वाली साठोत्तरी  
हिंदी कहानी में किण्व गण मिल्यगत प्रयोग विवक्षित हैं—

मोहभंग की स्थिति का चित्रण

हठे पक्ष का साहित्य प्रति: मोहभंग  
का साहित्य है। अष्ट व्यास, राजनेताओं की वादार्थिकता, कर्त विदेशी  
मरण, धूँधीवादी अधिवाग्वक्त, भूकंपी, कोष्पासी, काजकजारी, आदि समस्यओं  
के आम आदमी के मन में असंतोष एवं आक्रोश की भावना को पगाना।  
साठोत्तरी कहानी ने मोहभंग की स्थिति को सूक्ष्म, स्पष्ट और  
स्टीक रूप से अभिलिखित किया है।



## नगर केंद्रित प्रस्तुत डॉली

बाहरीकरण और नगरीकरण की प्रक्रिया तब से धरित हुई है जिसके परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के सम्पर्क हेतु बाहर की ओर प्रभावित किया। समाज के इस प्रभाव की प्रकृति का साहित्य में अब नगर की परिस्थितियों व प्रकृतियों को परिलक्षित करने लगा। इस प्रकार साठोत्तरी हिंदी कहानी नगर केंद्रित हो गयी।

## जनवादी चेतना की विस्तृत व्यंजना

साठोत्तरी साहित्य में आस्था और अनास्था दोनों का संकुल चित्र मिलता है। जनवाद के मूल में सर्वोत्तम की की शक्ति और संघर्ष के लिए किए गए सचेत प्रयास एवं कठिनीय समाज की परिकल्पना प्रमुख हैं।

## सहज शिल्प और भाषा डॉली

साठोत्तरी हिंदी कहानी सहज शिल्प और भाषा डॉली के महत्त्व से अभिलेखित हुआ है। साठोत्तरी साहित्य की भाषा अभिजात्य और संस्कार की भाषा नहीं है अपितु अनुभवों की मिट्टी में तपी-निरवरी आम जनमानस की भाषा है।

विशेष रूप में यह कह सकते हैं कि हिंदी कहानी की महत्वपूर्ण धारा नयी कहानी और साठोत्तरी कहानी में संवेदना और शिल्प के स्तर पर व्यापक परिवर्तन किए गए। इन कहानियों का विषय उसका भोगा हुआ अपार्ष है साथ ही इस भोगे हुए अपा की अनुभूति की संभवता और परिवेशव्यापी अनुभवों, घटनाओं, संदर्भों की सामाजिक किन्तु अपार्ष प्रस्तुति और वह भी परिचित शिल्प में, इसका महत्वपूर्ण आयाम है।



समय के साथ साथ भारत में शिक्षा का स्वरूप बदलता गया। भारत की जहाँ अब पढ़ने के लिये शिक्षा विकसित और बदलती शिक्षा व्यवस्था के लिये केवल लक्षित विचार। छात्रों को अपने में समावेशित किया, परन्तु पाठ्यक्रमों के विकास में भी अपनी अवलम्बित अभिमत लिखी।

भारत में अंग्रेजी राज की स्थापना के पूर्व, शिक्षाशास्त्रियों के अनुसार, सभी स्तरों की हिंदू और मुस्लिम शिक्षा संस्थाओं का जाल फैला हुआ था। जहाँ तक भाषा का सम्बन्ध है, उत्तर भारत में हिंदी और फारसी की शिक्षा देने वाले स्कूलों की आवश्यकता थी। शिक्षा का जाल अंग्रेज सरकार का प्रारम्भिक प्रयास संतोषजनक नहीं था किन्तु कालांतर में कुछ दिरूप के बाद शिक्षा की स्थिति में कुछ परिवर्तन हुआ। इसके बाद शिक्षा प्रसार का मार्ग तभी से बन। माध्यमिक विद्यालयों में आधुनिक भारतीय भाषाओं की शिक्षा का आरम्भ करने लगा। इसके आवश्यक पूर्वावस्था संबंधी प्रयास हुए। कुछ दिरूप के बाद सरकार ने सभी शिक्षा को प्रोत्साहन देने में सक्रिय भूमिका लिखी। स्वतंत्रता के उपरांत भारत सरकार ने शिक्षा को प्रोत्साहन देने में सक्रिय भूमिका लिखी। १९५० के उपरांत भारत सरकार ने शिक्षा की स्थिति के सुधार हेतु आर्थिक व विचारिक कदम उठाए। इसके लिये केवल शिक्षा की स्थिति के सुधार हुआ परन्तु पाठ्यक्रमों में भी विकसित हुआ। जिसने भारतीय समाज और भारतीयों की स्थितियों को अच्छी तरह से समझा, परन्तु और इसके अनुसार साहित्य और समाज का मार्गदर्श किया।

भारत में अंग्रेजी राज की स्थापना के पूर्व ही सभी स्तरों पर हिंदू और मुस्लिम स्वतंत्र संस्थाओं का जाल व्यापक फैला हुआ था। सभी भारत राज की स्थापना का तथा इसके भी प्रायः उत्तर भारत में उत्तर हिंदी और फारसी की शिक्षा देने वाले स्कूल थे।



दिया गया था। सभी स्तर पर हिंदू + मुस्लिम स्थायीता का भाव फैला हुआ था। उत्तर भारत में कस्बों की भिन्न देने वाले अभाविक शक्तों में भी और इस व्याख्या कंपनी के शासन के दौरान ही देशी प्रकृति के स्वरूपों को प्रायः नष्ट कर दिया गया था। क्योंकि कंपनी शासन के सभी भी भारतीयों की भिन्न के प्रति आदि उत्साह किया गया था और 1823 ई. तक भिन्न के विकास के संबंध में इसी कारण कोई भी नहीं हुआ।

प्रगति की एक विधि के रूप में भिन्न व्यापक और सामाजिक विकास दोनों का भाव उठाने के लिए अत्यन्त धमतीयों या कॉशलों के विकास को प्रोत्साहित करती हैं। परिणामस्वरूप, भिन्न को कॉशल और परिणामस्वरूप विकसित करने के एक उपकरण के रूप में देखा जाता है जो किसी देश के सामाजिक विकास में योगदान देता। भिन्न लोगों को कई संभावनाओं से परिचित करने में भी भूमिका निभाती है। जिससे क्षमता में सुधार किया जा सकता है और परिणामस्वरूप संगठन और राष्ट्र विकसित होते हैं। भिन्न व्यापकता या कार्यकारियों की स्थलात्मकता में भी मदद करती है। कल्पना और स्थलात्मकता मानव विकास में कुछ महत्वपूर्ण तत्व हैं।

समाज में भिन्न के महत्व को कम करने आकांक्षी जा सकता है। यह व्यापकता को समझ सकता है, आर्थिक विकास को गति देता है, सामाजिक एकजुटता को बढ़ावा देता है, स्वास्थ्य परिणामों में सुधार करता है और ज्ञान और जवाबदारी को बढ़ावा देता है। भिन्न व्यापकता, सामाजिक और वैश्विक विकास के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती है।



शिक्षा हमें जीवन के बारे में सब क्वार्ट और अपने अस्त-वस्त की दुनिया को समझने में मदद करती है। प्रायोगिक तर्कों, समस्याओं के विश्लेषण और समाधानों के विकास के माध्यम से एक प्रगतिशील विकासशील संस्था बन सकता है। जैसे-जैसे व्यक्तियों का और अनुभव प्राप्त करता है। उसी आत्म-विकास को प्रोत्साहित होती है।

शिक्षा किसी भी व्यक्ति को समझ और संपन्न करती है, शिक्षा मानव को मानवता सिखाती है। एक बेहतर जीवन को जीने के लिए हर व्यक्ति को शिक्षित होना आवश्यक है। यदि आप शिक्षित हैं तो आप जीवन की हर समस्या का समाधान की खुद सृजन के साथ कर सकते हैं। शिक्षा लोगों की स्वयं और दुनिया में बारे में समझ को समझ करती है। यह उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार करता और व्यक्तियों और समाज को व्यक्ति सामाजिक लाभ पहुंचाता है। शिक्षा लोगों की उत्पादकता और स्वायत्तता को बढ़ाती है और उच्चता और लचीलेपन प्रगति को बढ़ाता देती है।

शिक्षा व्यक्तियों की अंतर्निहित क्षमता तथा उनके व्यक्तित्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उस समाज में एक व्यक्ति की बुद्धि विचारों के लिए समायोजित करती है। तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। शिक्षा लोगों की स्वयं और दुनिया के बारे में समझ को समझ करती है। यह उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार करता है और व्यक्तियों और समाज को व्यक्ति सामाजिक लाभ पहुंचाता है। शिक्षा लोगों की उत्पादकता और स्वायत्तता को बढ़ाती है।



### कहानी आलोचना का पूर्व परिदृश्य

आलोचना या समीक्षा अपरिहार्य है। आलोचना तब देवता नहीं बनती - समान दिशा या दिशाभूत। किसी कवि, रचना या विषय से एकदम से 'समान' बात प्राप्त करती। अनेक तब का विवेचन कवि समीक्षा है। 'मिली' विषय, कवि या हरी के वैयक्तिक और व्यावहारिक पक्षों का तार्किक विश्लेषण और अनावश्यक कविता ही समीक्षा मन्त्रमत्ता है।

जिस तरह कविता और अन्वय में 'व्यक्ति' आलोचना मिलती है उस तरह कहानी में आलोचना का देवता भी मिलती है। कहानी एकलकों की श्रमिका ने कहानी में आलोचना में व्यक्तित्व जोड़कर बनने में मदद की। प्रवेश से यद्यपि कहानी अस्वाभाविक जगह को बीच लेकटिया रूप से व्यक्तित्व रही तथापि आह्वय समीक्षा में इस पर गंभीरता से ध्यान नहीं दिया।

### कहानी आलोचना का पूर्व परिदृश्य

आधुनिक हिंदी का प्रवेश

इस तरह जाने वाले आलेख युग की नव पश्चिमाश्रय जैसे कवि कवि युवा, हरिश्चंद्र मंगलिक, हिंदी मंदीप, आनंद - कंदमली और आलोचना हिंदी आलोचना के अनेक नमूने अन्वय - अन्वय पर दृष्टि और रचना अनेकों तथा पुस्तकों की समीक्षाएं देवता भी मिलती रही अनेक जगह नमूनों के अन्तर्गत कहानी आलोचना का कोई समान प्रभाव नहीं हुआ। हिंदी आह्वय में कहानी को पहली बार व्यापक महत्व प्रदान करने का कार्य आचार्य महेवीर प्रसाद द्विवेदी के लेखन में परंपरिक पश्चिमाश्रय के माध्यम से हुआ। हिंदी आलोचना के सर्वाधिक वैज्ञानिक रूप के प्रदर्शन आचार्य रामचंद्र शुक्ल कविता प्रेमी से दशमिक के इस दौर की कहानियों की बारे में आह्वय हुआ नहीं मिल सका।







का परिवर्तित स्थिति के बाद कहानी की ओर आलोचना का दृष्टि आकर्षित हुआ और कहानी आलोचना की एक परंपरा विकसित हुई।

श्रुतानुसार आलोचना के अंतर्गत आधुनिक कहानियाँ आलोचना की पुस्तक आधुनिक साहित्य में प्रस्तुत कहानी की विशेष दृष्टि आकर्षित करता है। इसके अंतर्गत वे तत्वात्मक से विशेष आकर्षण आकर्षित करता है। इसके अंतर्गत वे तत्वात्मक से दूसरा महत्वपूर्ण नाम देवीशंकर अवस्थी का है, जिन्होंने अपने अल्प-जीवन में 'विवेक के रंग', 'और' 'लड़कियाँ', 'सद्वर्त' और 'महाती' की श्रुतियाँ में किसी भी शक्ति की समीक्षा 'मूल्य - मूल्य' अपादि साहित्यिक मूल्यों के आधार पर करने का आग्रह किया। अवस्थी जी ने सबसे पहले कहानी की समीक्षा के लिए मूल्य-प्रतिमानों को तैयार करने के खतरों से अपाह्न नहीं हुए। वे इससे डरते हुए आलोचनात्मक चीजें कहानी का संकेत किया। बाद में रामवर जी ने 'कहानी', 'कहानी कहानी' में मूल्य प्रतिमानों के आधार पर कथा समीक्षा की एक नयी संशोधन की विकसित करने की कोशिश की।

साहित्य क्षेत्र में यह कहा जा सकता है कि आलोचनात्मक समय में कथात्मक गहरा साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधाओं में से एक कहानी की ओर लगी। यह कहानी धारिणी और परिष्कृत हो गई। इसके अंतर्गत कहानी की ओर समीक्षाओं का दृष्टि आकर्षित हुआ और वे गंभीरतापूर्वक इसका विश्लेषण करने लगे। कहानी आलोचना का पूर्व परिदृश्य अनेक ही संतोषजनक व ही परंतु वर्तमान समय में यह स्थिति सुखद है। विवेकी युग में सरस्वती और बड़े लैंगी पात्रिकाओं के बीच ही कहानी का यदा-यदा प्रभाव हुआ। तब समय का कहानी आलोचना की कोई बहुत उपरक्षित और स्वतंत्र पुस्तक उपलब्ध नहीं हो सका।



इससे तब गहरी-गहरी प्रेम-पद की दिशा में आगे बढ़ने पर प्रसाद की  
 आकाशवाणी और आलोचन की प्रेरणा का विस्तृत विवरण दिया  
 गया। इस प्रकार इस पुस्तक में पहले बार प्रेम-पद की ओर  
 बढ़ने तक की गहरी ओपेक्षा से कहीं भीतर की ओर भी देखना  
 नहीं था प्रसाद दिया गया। आलोचन के रूप में गहरी-गहरी में आगे बढ़ने  
 और आदर्श का तब प्रभुत्व था और वह आलोचन प्रवृत्ति की ओर भी।

इस अपारिष्कृत स्थिति में देखते हुए आलोचना के इसकी समीक्षा  
 को गंभीरता से नहीं लिया और प्रसाद के रूप में। आधुनिक काल  
 के आरंभ में साहित्यकारों और समीक्षकों का संबंध भी और मुक्त  
 का अन्वेषी सजावों के कारण वे प्रेमियों से मुक्त नहीं हो सके।  
 इसीलिए गहरी के गहरी और समीक्षा को इसकी समीक्षा और  
 आदर्श की ओर आगे बढ़ने के लिए प्रसाद के लक्ष्य में। इसी प्रकार  
 प्रसाद जैसे गहरी प्रसाद का भी आगे बढ़ने होता है। निरन्तर ही  
 गहरी की दिशा और दशा को बढ़ते दिया। इस परिवर्तित स्थिति में  
 यह गहरी की ओर आगे बढ़ने का एक आदर्श हुआ और गहरी  
 आलोचना की एक परंपरा विकसित हुई। मुक्तता आलोचना के अंतर्गत  
 आदर्श लक्ष्य के समीक्षा की पुस्तक आधुनिक साहित्य में प्रभुत्व गहरी  
 ओर ही होता आ रहा है।

इसकी जो लक्ष्य समीक्षा अपने पहले गहरी की समीक्षा  
 के लिए कार्य-प्रतिभा को लक्ष्य करने के रूप में आगे बढ़ते  
 हुए इससे दूर ही आलोचना के बीच गहरी का अंतर्गत किया।  
 अतः में लक्ष्य की लक्ष्य लक्ष्य गहरी में गहरी प्रतिभा के अन्वेष  
 पर कथा समीक्षा की एक लक्ष्य आलोचना विकसित करने लगी है।



## पश्चिम-पूर्वी एशिया में कहानी

एशिया का प्राचीनतम सभ्यता, संस्कृति और धर्म की जन्मदात्री है। सभ्यता के आरंभ से ही एशिया में साहित्य और संस्कृति के विभिन्न प्रतिमान स्थापित किए और संसार के आधिनायक साहित्यकारों और संस्कृतिकारियों का प्रभावित किया। कहानी विद्या के आरंभिक आख्यानकों के रूप में विख्यात जातक कथाएँ और पंचतंत्र एशिया की ही देन हैं।

कहानी का विकास विश्व के विभिन्न भागों के साथ-साथ, एशिया के विभिन्न क्षेत्रों में भी हुआ। चीन, जापान और कोरिया जैसे पूर्वी एशियाई देश; भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश और श्रीलंका जैसे मध्य एशियाई देश; अरब, फारस और तुर्की जैसे पश्चिम एशियाई देश; बर्मा, कंबोडिया, इंडोनेशिया, मलायिया, सिंगापुर, थाईलैंड और वियतनाम जैसे दक्षिण पूर्व एशियाई देश में कहानी विविध रूप में परिपक्व और परिष्कृत हुई।

## पश्चिम-पूर्वी एशिया में कहानी

बर्मा, थाईलैंड, मलायिया, इंडोनेशिया, कंबोडिया, वियतनाम, फिलीपीन्स व कोरिया जैसे पश्चिम पूर्व एशियाई देशों में सभी प्राचीन भिलालंकारों में सांस्कृतिक आभा एवं देवतापरी, शही व पल्लव आदि लिपियों का साथ, कई भिलालंकारों में छंद व व्याकरण का सुक्ष्म प्रयोग दृष्टिगोचर होती है।

## बर्मा में कहानी

बर्मा में आधुनिक कहानी आगल बीसवीं सदी में ही गौरव विराजित की। उच्चतम कहानी को जादू के प्रतिभा और किंवदंती के जाल से आजाद कर सांस्कृतिक और स्पष्ट



होने को अपनाने आने के कहानीकारों के लिए मार्ग प्रशस्त होना। वर्ग की कहानी आधारित जाति के जीवन के उन पाठकों को अपेक्षाकृत करती है जो सोचने और नई अवधारणाएँ प्राप्त करने के लिए खुले हैं। वर्ग की कहानी आधारित जाति के जीवन के उन पाठकों को अपेक्षाकृत करती है। वर्ग की कहानी महत्वपूर्ण है क्योंकि वर्ग के जीवन की विकासशील आदि और नई अवधारणाएँ हैं जो वहाँ के समाज में स्थापित कहानी में।

### कंबोडिया में कहानी

कंबोडिया में कहानी के विकास में भारतीय और चीनी प्रभावों के अतिरिक्त देश के स्वयं जाति के लोककथाएँ नई महत्वपूर्ण भूमिका न सिर्फ किन्तु कंबोडिया की कहानी अपनी लोकप्रियता में गहरी छाप छोड़कर वहाँ की सामाजिक जीवन के जीवन को, उनकी भावनाओं को और उनके संघर्षों को समर्थन देने में सक्षम करती है।

### थाइलैंड में कहानी

थाइलैंड में कहानी की परंपरागत कहानी भारतीय सभ्यता से प्रेरित है। ये ज्यादा सामान्य की कहानी पर आधारित है। आज के आधुनिक समय में थाइलैंड की कहानी में आपका परिवर्तन हुआ और यह सामाजिक मुद्दों और भौतिकशास्त्रिक सूक्ष्मताओं पर कहानी लेखन का स्थापित हुआ।

### इंडोनेशिया में कहानी

इंडोनेशिया की कहानी समकालीन सामाजिक और राजनीतिक उपलब्धि - पुष्पल से प्रभावित होकर विकसित हुई। इंडोनेशियाई कहानी में नई अवधारणा और प्रभावों के अतिरिक्त



के विविधता को जलम दिया। इंडोनेशिया की कहानी में विभिन्न धर्मों, विचारों और सांस्कृतिक कथाओं को धुलत हुआ देखा जा सकता है। इंडोनेशिया की कहानी की विषय वस्तु के विचारण में समाजवादी, कम्युनिस्ट, धार्मिक, आधुनिक और उत्तर आधुनिक के संकेत को पराजित प्रतिनिधित्व देने की अनुमति इंडोनेशियाई कहानी में प्रकट रूप से परिलक्षित होती है।

## मलेशिया में कहानी

चूंकि मलेशिया आधिकारिक तौर पर एक औपनिवेशिक राज्य का अंग रह चुका है इसलिए मलेशिया में कहानी औपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष करते हुए विकसित हुई। मलेशिया की कहानीकारों ने एक राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक पतन की महागाथा को, आधारभूत जनता की गरीबी और महिला जीवन शैलियों को, औपनिवेशिक संघर्ष और लड़ाई के संकेत प्रकट किया है। ये कहानीकार मलय और देशज लोगों के दुःख, दर्द और पीड़ा को दर्शाती हैं।

## सिंगापुर में कहानी

सिंगापुर में कहानी लेखन वहाँ की सभी प्रमुख भाषाओं में हुआ। इन सभी भाषाओं में रची गई कहानी सिंगापुर के समाज और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को प्रस्तुत करती है। सिंगापुर में सर्वाधिक कहानी लेखन ही प्रतिष्ठित हुआ इसके बाद उपन्यास लेखन। इन सभी भाषाओं में रची गई कहानी है।



## विषयनाम में कहानी

विषयनाम में आधुनिक कहानी की सुलझाव का सामाजिक अन्वेषण को प्रतिष्ठित किया। उन्होंने मनोवैज्ञानिक स्फूर्त मानना था कि कहानी में बिना किसी पूरग्रह के यथार्थ की रचना होनी चाहिए, चाहे वह वास्तविकता हो या आंतरिक।

पाश्चिम में हिंद महासागर और पूर्व में पश्चिम चीन सागर से बने वाले समुद्री रेडम मार्ग के जोरों पर सवेत सांस्कृतिक आदान-प्रदान में आधुनिक आलोचक आलोचकों को परिणामस्वरूप आधुनिक विचारधारा में अत्यधिक विभिन्न संस्कृतियों विभाजित की। पश्चिम एशिया में पश्चिमी सभ्यता सिंधु नदी के किनारे उभरी। इस सभ्यता को सिंधु नदी सभ्यता या कलापीन संस्कृति से, इसका सम्यक्तम माना जाता है। यह 3300 ईसा पूर्व से 1300 ईसा पूर्व के बीच अस्तित्व में था।

कोकोडिया को दक्षिणपूर्वी एशिया के सबसे पुराने देहा के स्वरूप में जाना जा सकता है, लेकिन यह इसके प्राचीन इतिहास से नहीं ज्यादा अधिक है। दक्षिण-पूर्वी एशियाई, कहानी का प्रतिनिधित्व करता। कोकोडिया, इंडोनेशिया, मलायेशिया, सिंगापुर, थाईलैंड और विषयनाम की कहानियाँ बरत होता है। उन्होंने मनोवैज्ञानिक जटिलता वाले चरित्रों को बड़ी कुशलता से प्रस्तुत किया। उनका स्फूर्त मानना था कि कहानी में बिना किसी पूरग्रह के यथार्थ की रचना होनी चाहिए। लेकिन यह इसके प्राचीन इतिहास से नहीं ज्यादा अधिक से अधिक के लोगों द्वारा महसूस किया।



हंगोर की कहानी 'पत्नी का पत्र'।

यह भी कहानी एक पत्र के माध्यम से प्रस्तुत की गई है जिसमें अनेक शिकंशें हैं, सामाजिक दंग है और खुद को खो कर पान तक का सफर है। 15 साल के वैवाहिक जीवन के अंत वह अपने जीवन को एक होकर अपना घर छोड़कर एक तीर्थ स्थान पर चली जाती है और वहाँ एक पत्र लिखती है जो उसी पत्र के नाम होता है।

जोत जिस दुःख भावों है वह तुम्हारी रहस्यी में मुझे नहीं मिले। जिसके लिए विद्याता का दुरा कह संके। वैसे अगर तुम्हारा स्वभाव तुम्हारे छोटे आई की तरह भी होता है तो मैं अपनी सती यादों की जेबानी की तरह प्रति देवता को दोष देने के बजाय विश्व-देवता को ही दोष देने की चेष्टा करती। इस संसार में नारी का सच सा प्रपंच क्या है, यह मैं पा चुकी हूँ। अब मुझे तुम्हारी मोड़ी जरूरत नहीं....

राष्ट्रीय आंदोलन के दौर में प्रभावकारी कहानी लेखकों में 'रविंद्र नाथ टैगोर का नाम उल्लेखनीय है। 'पत्नी का पत्र' नामक कहानी उन्नीसवीं सदी है। पत्नी का पत्र कहानी पत्र शैली में लिखी गई कहानी है जिसमें संवाद और साहित्यिक तत्वों का प्रयोग करते हुए दो स्वतंत्रता तथा विचारों के टकराव को व्यापक किया गया है।

इस कहानी के माध्यम से राष्ट्रीय आंदोलन के समय लेखकों के स्त्रियों के प्रति सम्मान और समर्पण का भाव भी व्यापक होता है, जिसके कारण आज उस सामाजिक वातावरण में टैगोर को सामंती आश्रय का भिन्न भी कतना पड़ा होगा।

प्रस्तुत: इस कहानी का मूल संदेश पुरुष-प्रधान समाज की तीखी आलोचना करना है, क्योंकि कहानी की नायिका मृणाल ने पति



हम जानते हैं कि हमारे देश में बहुत सारे लोग हैं जो बहुत ही गरीब हैं।  
 वे बहुत ही कम पैसे के साथ बहुत ही बड़े परिवारों में रहते हैं।  
 वे बहुत ही कम पैसे के साथ बहुत ही बड़े परिवारों में रहते हैं।

हम जानते हैं कि हमारे देश में बहुत सारे लोग हैं जो बहुत ही गरीब हैं।  
 वे बहुत ही कम पैसे के साथ बहुत ही बड़े परिवारों में रहते हैं।  
 वे बहुत ही कम पैसे के साथ बहुत ही बड़े परिवारों में रहते हैं।

हम जानते हैं कि हमारे देश में बहुत सारे लोग हैं जो बहुत ही गरीब हैं।  
 वे बहुत ही कम पैसे के साथ बहुत ही बड़े परिवारों में रहते हैं।  
 वे बहुत ही कम पैसे के साथ बहुत ही बड़े परिवारों में रहते हैं।

हम जानते हैं कि हमारे देश में बहुत सारे लोग हैं जो बहुत ही गरीब हैं।  
 वे बहुत ही कम पैसे के साथ बहुत ही बड़े परिवारों में रहते हैं।  
 वे बहुत ही कम पैसे के साथ बहुत ही बड़े परिवारों में रहते हैं।



यह पूरी कहानी एक पत्र के माध्यम से प्रस्तुत की गई है जिसमें उनके 'अभिवादन' हैं। सामाजिक दबाव है व खुद को जो घर पाने तक तक सफल भी। 15 साल के वैवाहिक जीवन के दौरान वह अपने जीवन को एक ही तरह अपना घर छोड़कर एक तीर्थ स्थापना करती है और वहां एक पत्र लिखती है जो उनके पति के नाम का होता है। एकीकरण और दार प्रेमी यह कहती 'पानी का पत्र' में मुलाकात नामक महिला के माध्यम से महिलाओं के सम्पूर्ण जीवन को चित्रित किया गया है।

कहानी में मुख्य किरदार मुलाकात के अनुकूल खुद हैं। बीच से लगभग कई वर्षों की लिखी यह कहानी इस महिला की है जो अपने आसक्ति को पहचानती उस पान तथा जिवां रखने के लिए अपना घर त्याग देती है और सामाजिक मोह भाग से दूर लड़ी जहां में अपने लिए जगह तलाशती है। यह कहानी इस खुद को लिखने में सक्षम होती है कि यदि महिला चाहती है वह अपना आसक्ति नामक रख सकती है। और लड़ी मजबूती के साथ इस समाज और इसकी दमिस्तानी सोच से लड़ सकती है।

यह पूरी कहानी एक पत्र के माध्यम से प्रस्तुत की गई है जिसमें उनके 'अभिवादन' हैं, सामाजिक दबाव है और खुद को जो घर पाने तक तक के वाह विवाह के 15 वर्षों में कभी भी इससे वापस नहीं पड़ी नी के पत्र लिखें किन्तु आज वह लिख रही है और उसे जीवन मजबूती खुद का पत्र ल समझ जाए और वह इस पत्र के माध्यम से महिलाओं के मुलाकात को डोरेने की मोहोता करती है।



मनुष्य के जीवन में आनन्दों का भूत ही है वह आनन्द  
जिसे हम माता-पिता की मृत्यु से जाने के बाद उनके चरित्र  
आदर्श पर देखकर बहुत दिनों के बाद जान लेते हैं  
जान है और वह खुद को जानने के लिए अपनी ही शक्ति  
के माध्यम से आ जाती है अतः हम जान में जानें धीरे-धीरे  
में आ जायता जाता है वह दिनों में जानें देता जा सकता है।

अ मैं वह अपने कल्प में बत गी यह अतः दुःख निवृत्ति  
है कि फिर वह एक कल्प में उसे और अपने आई गी सन्निपात  
कर ही गया था तब वह एक गी सिद्धु उलग आई मारा  
गया। वह निवृत्ति है कि उलग कल्प बना हों - उलगस  
ही सन्निपात था सिद्धु फिर नही हुआ क्योंकि वह लक्ष्मी थी।  
मित्र-पक्षों की लोभों ने वह गी मुल्लत लक्ष्मी को उभ लिफ  
एक गी उभ कल्प का अर्थ यही था कि लक्ष्मी का मुख्य शक्ति  
रक्त है कि उलगी आयु की वही होती और वह वह महिलाओं  
को एक कल्प में मुख्यत्व बना बना गया। उनके अंदर वह फिर वह  
हका अल्प पक्षों का विचार हुई। उनके अंदर वह फिर वह एक समय  
बिना का फिर गती है जब उलगी लक्ष्मी की लिफ उनके पक्षों के  
मात्र देखने आते हैं और उलगी का ही लक्ष्मी होती है कि व्याह के  
लिफ लक्ष्मी का सुख ही का पक्षों है। उभ पर अतः निवृत्ति दुःख वह दुःख  
करती है वह देखकर सुलभर उनके उलगी - अकलुषों का वहीवाता  
कला है फिर उलगी अकलुषों की पेटारित व्याह लक्ष्मी होती है केवल  
अ लक्ष्मी को कि वह लक्ष्मी है सिद्धु वह ही सुल उलक्ष्मी की अद  
मुल्ल विषय पक्ष है। वह अतः सारे आर गीरे लक्ष्मी पर होता है  
की सिद्धु वह अतः उलगी लक्ष्मी की लक्ष्मी की पक्ष न थी।